सैन्धव सभ्यता की देन

1. प्रवर्ती भारतीय सभ्यता के अधिकांश तत्वो का मुल हमें भारत की इस प्राचीन सभ्यता मे दिखाई पड़ती है भारतीय (हिन्दु) सभ्यता के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक कलात्मक पक्षों इत्यादी का रूप हमें सैन्धव सभ्यता से प्राप्त हो जाता है।

2. सामाजिक जीवन के क्षेत्र में इस चतुर्थवर्ण व्यवस्था की बीज सैन्धव सभ्यता मे पाते है मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त अवशेषों के आधार पर विद्वानों ने सैन्धव समाज को चार वर्गों में बाटां है। —— विद्वान, योधा, व्यापारी, और शिल्पकार (श्रमिक) इन्हे हम ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य एव शुद्रका पुर्वज कह सकते है

3. आर्थिक जिवन के क्षेत्र में हम पाते है कि कृषि पशुपालन उद्योग धन्धे व्यापार वाणिज्य इत्यादि को सैन्धव रूप से प्रारम्भ हड़प्पा वासियों ने किया था जिसका विकास बाद की सभ्यताओं मे हुआ यहां के निवासी बाह्य दुनिया से सम्पर्क स्थापित करने का मार्ग प्रस्त किये थे जो बाद के सदियों तक होता रहा

4. धार्मिक जगत में सैन्धव वासियों का योगदान प्रवर्ती हिन्दु समाज पर व्यापक रूप से दिखाई देता है

—— [A] सैन्धव धर्म में माता देवी का प्रधान स्थान था इसी का विकसीत रूप शाक्त धर्म मे दिखाई देता है।

[B] सैन्धव धर्म मे लिंग पुरुष देवता के अस्तित्व मिलते है जैसे पशुपती शिव की पुजा लिंग पुजा इत्यादि, कालान्तर में हिन्दु धर्म में विशेष रूप से पाये जाते है

[C] सैन्धव समाज मे वृक्ष पुजा का प्रमाण मिलता है लेकिन मुद्राओं पर पिपल के वृक्ष टहनियों, पत्तीयों के इत्यादी के स्पष्ट प्रमाण मिलते है कालान्तर में हम पाते है कि लोग एव हिन्दु लोगो ही धर्म में पिपल की पुजा होती है

[D] सैन्धववासी विभिन्न पशुओं की पुजा करते रहे होंगे जिसे कालान्तर के हिन्दु धर्म में भी देखा जा सकता है

[E] सैन्धवकालीन जल को पवित्र मानते रहे होंगे जिसका प्रमाण मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार से मिलता प्रवर्ती हिन्दु समाज में जल का विशेष महत्व है और बहुत से हिन्दु उत्सव स्नान से ही सम्बन्धित है।

[F] स्वास्तिक का चिन्ह जो सैन्धव सभ्यता

मे मिला है वह बाद के हिन्दु सभ्यता मे देखा जा सकता है

[G] सैन्धव सभ्यता में अनेक पशुओं के चित्र मिले है। परवर्ती हिन्दु समाज मे भी पशुपूजा का प्रमाण मिलता है।

इस प्रकार हम देखते है कि सैन्धव सभ्यता की बहुत सी परम्परायें वर्तमान सभ्यता मे भी अपने परिवर्तित रूप मे प्रचलित है

//